NJESR/ August 2022/Volume-4/ Issue-8 **E- ISSN-2582-5836**

DOI-10.53571/NJESR.2022.4.8.23-27

'डार से बिछुड़ी' उपन्यास की तात्त्विक समीक्षा

नाज़िया नाज़ (एम0 ए0 हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर)
डॉ0 अरुण कुमार, एसो0 प्रोफेसर, हिन्दी रा0 रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर
मो0 8923233108
डॉ0 राजू, असि0 प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान, रा0 रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

(Received:11July 2022/Revised:20 July 2022/Accepted:15 August 2022/Published:23 August 2022)

सारांशः–

आधुनिक भारतीय उपन्यास जगत में कृष्णा सोबती एक महिला उपन्यासकार के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने स्त्री समस्या को लेकर 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'यारों के यार', 'बादलों के घेरे', 'ज़िन्दगीनामा' 'चन्ना' आदि अनेक उपन्यासों की रचना की। उन्होंने हिन्दी उपन्यास लेखन को एक नयी दिशा प्रदान की। भाषा, भाव, कला एवं सामाजिक समस्या को इस उपन्यास में एक नये कलेवर के साथ चित्रित किया गया है। कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में नारी चित्रण अत्यन्त मार्मिक है। पंजाब के अंचल में घटित यह एक आंचलिक उपन्यास है। सृष्टि की जननी, देवी, शक्ति, प्रेरणादायिनी, ममतामयी, त्यागमयी आदि सभी विभूतियों से अलंकृत होने के बावजूद भी सभ्य समाज द्वारा नारी युगों–युगों से शोषित, प्रताड़ित होती आ रही है, अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने के लिए अन्तः–बाह्य संघर्ष करने के लिए निरन्तर बाध्य है। इस अंधविश्वासी रूढ़िवादी कुण्ठाग्रस्त, समाज में नारी के लिए यह विड़म्बना ही है। कृष्णा सोबती नारी की इन मनोदशाओं से भली–भाँति परिचित हैं उनके उपन्यासों में नारी की आत्मनिर्भरता एवं प्रगतिवादी चिन्तन का स्वर मुखरित हुआ है।

प्रस्तावनाः–

कृष्णा सोबती को हिन्दी कथा–साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास आदि विधाओं पर मुक्त–हस्त लेखन कार्य किया। उनके उपन्यासों और कहानियों में स्वतन्त्र स्त्री–चरित्र का चित्रण है। उनके स्त्री–पात्र बन्द कमरों की स्त्रियाँ अथवा संकीर्ण समाज की स्त्रियाँ नही हैं, बल्कि खुले परिवेश में जीने के लिए संकल्प लेने वाली ज़िम्मेदार स्त्रियाँ है। उनके उपन्यासों और कहानियों में पश्चिम भारत के सामाजिक, संस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश का बृहद चित्रण है। प्रसिद्ध आलोचक एवं संरक्षक राजेन्द्र यादव उनके विषय में कहते हैं। ''कृष्णा जी ने लिखा बहुत कम है– लम्बी कहानी या लघु उपन्यास जैंसी चार–पाँच चींजे, चार–पाँच कहानियाँ, बीस–पच्चीस सालों की मात्र यही उपलब्धि, लेकिन मोती चुनना, पच्चीकारी, ज़रदौज़ी की महीन–नफीस कारीगारी या इन शब्द को कोई भी ऐसा नाम दिया जा सके।'' [1]

हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज है। यहाँ नारी को स्वतन्त्रता से सोचने बोलने व कुछ करने का संवैधानिक अधिकार तो है, पर सामाजिक अधिकार नहीं। समाज उसे लताड़ता है। नारी ने अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व बनाए रखने, समाज में पुरुष के समान दर्जा पाने के लिए प्रयासरत है।

साहित्यकार की सृजनात्मकता शक्ति का मुख्य स्रोत मानव–जीवन और उससे जुड़ी विविध क्रीड़ाएँ ही होती हैं। जीवन की प्रतिछाया ही साहित्य है। एक मानव के जीवन में जो घटित होता है। वह सब साहित्य में प्रस्तुत है।

कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य की नारी समाज में संघर्ष करती दिखाई पड़ती है। पारिस्थितिक समस्याओं से घिरी होने के उपरान्त भी वे इन्हें हल करने का प्रयास करती है, जिसमें सफलता भी मिलती है। लेखिका की 'डार से बिछुड़ी' नारी पात्र जुझारू, आत्म–सम्मानी, परिस्थितियों से जूझने वाली व सहजरूप में आगे बढ़ने वाली हैं।

बीज–शब्द :–

चेतना, स्वतन्त्रता, दुराग्रह, अभिशप्त, समानता, यथार्थ, उत्पीडन, यौन–उत्पीड़न, शोषण, हीन–ग्रन्थि, विद्रोही, अस्मिता, अन्तर्द्वन्द्व, नारी–विमर्श, पूर्वाग्रह।

शीर्षक 'डार से बिछड़ी' उपन्यास की तात्त्विक समीक्षा –

कथानक की दृष्टिकोण से कृष्णा सोबती द्वारा लिखित उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' अत्यन्त मार्मिक समृद्ध और संवेदना से युक्त है। डार से बिछुड़ने का तात्पर्य प्रेम एवं परिवार से अलग होना तो है ही साथ ही पुरुष वर्चस्व, सामाजिक वर्चस्व से अलग होने की बात है।

इस कहानी की मुख्य पात्र पाशो है। उसके सपने रंगीन, खुले आसमान में उड़ने वाले, हैं। वह खुली ज़िन्दगी जीना चाहती है। नवयुवती पाशो का सपना था कि प्यारा सा राजकुमार आये और उसे ब्याह कर ले जाये पर उसके सामने एक समस्या यह है, कि उसकी माँ उसे छोड़कर अन्तर्जातीय विवाह कर लेती है। पाशो के पिता नहीं थे। इसका खामयाज़ा पाशो को झेलना पड़ता है। वह अपनी नानी, मामा–मामी के साथ रहती है। वे रोक–टोक लगाते हैं कि उसकी माँ ने बुरा काम किया। उसकी माँ ने विधर्मी युवक से विवाह करके पूरे खानदान की नाक कटा दी। उन लोगों को डर रहता है, कि कही पाशो भी माँ की राह पर न चल पड़े कि कही वह भी के विधर्मी युवक से प्रेम–विवाह न कर ले। उन्हें यह डर लगा रहता है। इसलिए उस पर बहुत–सारी बंदिशें लगा दी जाती हैं।

इस उपन्यास के पात्र भाषा एवं स्वभाव के अनुकूल अपने व्यवहारों की अभिव्यक्ति करते हैं। इसमें वर्णित पात्र एक परिवार से सम्बन्ध रखते हुए भी पूरे समाज को चित्रित करते हैं। कृष्णा सोबती के

उपन्यास की मुख्य नायिका पाशो है, जो सामाजिक उत्पीड़न एवं शारीरिक शोषण से पीड़ित है। पाशो की नानी, मामा–मामी जो पाशो पर बन्दिशें लगाते है। पाशो की माँ जिसके कारण पाशो इन परिस्थितियों से गुजरती है। पाशो का पति दिबान जो पाशो से बेहद प्यार करता है, उसकी मृत्यु हो जाती है। दिबान के दूर के रिश्ते का भाई जो पाशो पर बुरी नियत रखता है। मौका मिलते ही उसको अपनी अंग–संगिनी बना लेता है। लाला जी के हाथों पाशो को बेच देता है। लाला जी के तीन बेटे थे। वह काफी बुजुर्ग थे। लाला जी पाशो से कहते हैं कि मैनें तुम्हें खरीदा है, लेकिन अपने लिए नहीं अपने तीनों बेटों के लिए तुम मेरे बेटों को बराबर से खुश रखोगी। मेरे बेटों के लिए द्रौपदी बनकर रहना पड़ेगा। मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं चाहिए।

पाशो उस घर में कैदी बनकर रहती है। उसके तीनों बेटे उसके साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उसे मारते–पीटते हैं और शारीरिक–शोषण तो करते ही हैं। लाला जी का मंझला बेटा पाशो से प्यार करता था। उसने पाशो को नवेली, नाम दिया। मंझला बेटा लड़ाई के लिए जाता है और पाशो को भी साथ ले जाता है। वह पाशो से कहता है, कि लड़ाई जीत गये तो मैं तुमसे विवाह कर लूंगा। पाशो तैयार हो जाती है लेकिन लड़ाई में से मझला गायब हो जाता है। पाशो बहुत दुःखी होती है और परेशान पाशो औरतों के जुलूस में शामिल होती है। जुलूस में एक (बड़ी माँ) थी। जो पाशो की मदद करना चाहती थी।

इस उपन्यास में जिस पात्र को जो कहना है, उपन्यासकार ने उससे उसी भाव में कहलवाया है। छोटे–छोटे वाक्य, और सीधी भाषा के माध्यम से वह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ हैं। कृष्णा सोबती ने नारी के यथार्थ परिवेश को दर्शाया है। पाशो की नानी एवं मामा–मामी द्वारा उस पर बहुत–सी बंदिशें लगा दी जाती है बार–बार डाँट मिलती है। नानी कहती है, कि आग लगे तेरी जवानी में, चोटी मत बनाओ, ऐसे बालों में परन्दे मत लटकाओं, अच्छे कपड़े मत पहनो, इधर मत देखो, उधर मत जाओ। जितनी पाशो पर रोक–टोक लगती है। उतने ही उसके सपने रंगीन होते हैं।

'डार से बिछुड़ी' में पाशो आर्थिक पराधीनता के कारण शोषण का शिकार होती है। आर्थिक रूप से विपन्न होने के कारण पाशो हर व्यक्ति से शोषण का शिकार होती है। ''होश में आई तो दिन चढ़ आया था। डोले का पल्ला उठा देखा, दूर सामने सँकरी चढ़ाई पर किसी पुरानी हवेली के झरोखे जैसे घर–घूर इधर ही देखते थे। कौन सा नगर है, यह कौन कोट है, डोले वालों की हाँक पर घर के घर बाहर निकल आए। रूक्का पढ़ थलथली आवाज में बोले, अच्छा–अच्छा सो भला! शुकर है वरकत दिबान ने मेरा ऋण तो चुकाया। भागमरी, यह घर–बाहर संभाल और द्रौपदी बनकर सेवा कर मेरी और मेरे बेटों की।'' [2]

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में पाशो के शोषण एवं उत्पीड़न की व्यथा है। वह अनेक पुरूषों के उत्पीड़न एवं शोषण का शिकार होती है। यहाँ तक कि उसके मामा–मामी भी

इसमें पीछे नहीं। यहाँ कथन प्रस्तुत है– ''तन्दूर के पास पड़े लकड़ियों के ढेर से एक छड़ उठा कई हाथों पर मारने लगे। तेरी ऐसी करतूतें। तड़पी, रोई–धोई, पर मामू तो थमें नहीं। मामू का पैर पकड़कर सिर पटकने लगी और न मारो मामू, मैनें कुछ नहीं किया।'' [3] पाशो के विधवा होने के उपरान्त, उत्पीडन एवं शोषण का शिकार ऋण चुकाने हेतु देवर द्वारा बेचा जाता है।

स्वातंत्रयोत्तर भारत में नारी की दयनीय परिवर्तित स्थिति और दृष्टिकोण के बाद भी नारी शोषित हो रही है। समाज, अर्थ, धर्म, व्यक्ति सभी के द्वारा आज भी नारी शोषित है।

भारतीय समाज मे सदियों से यह प्रथा चली आ रही है, कि विधवा स्त्री को अपना सब कुछ त्याग कर , मोह–माया छोड़कर एक साध्वी की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ता है, नारी के लिए समाज में हर तीज–त्यौहार, घूमना–फिरना, अच्छा खाना–पीना निषेध माना जाता है।

कृष्णा सोबती ने उपन्यास के माध्यम से अपने काल में समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, रीति–रिवाजों, रूढ़ियों एवं लोककथाओं का यथार्थ चित्रण किया है। कृष्णा सोबती का समग्र साहित्य उनके अनुभव की उपज है। वे जन्म को नहीं, कर्म को श्रेष्ठ मानती है। समाज में फैले हुए अंधविश्वासों, रूढ़ियों, अभिशप्त जीवन जीने का भंडाफोड़ करके प्रगतिशील विचारों का प्रचार–प्रसार करके समाज में नारी की दयनीय दशा, पराश्रित होने की पीड़ा एवं उनके सामाजिक एवं दैहिक शोषण को गहराइयों से चित्रित किया है।

कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में नारी चित्रण अत्यन्त मार्मिक है। पंजाब के अंचल में घटित यह एक आंचलिक उपन्यास है। सृष्टि की जननी, देवी, शक्ति, प्रेरणादायिनी, ममतामयी, त्यागमयी आदि सभी विभूतियों से अलंकृत होने के बावजूद भी सभ्य समाज द्वारा नारी युगों–युगों से शोषित, प्रताड़ित होती आ रही है, अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने के लिए अन्तः–बाह्य संघर्ष करने के लिए निरन्तर बाध्य है। इस अंधविश्वासी रूढ़िवादी कुण्ठाग्रस्त, समाज में नारी के लिए यह विड़म्बना ही है।

भारतीय जीवन की तमाम विसंगतियों और विविध आयामों में नारी जीवन की त्रासद स्थिति से गुज़रती है । 21वीं सदी की नारी प्राचीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विडम्बनाओं एवं आडम्बरों के मकड़जाल से मुक्त होकर प्रगति की मुख्य धारा में शामिल होना चाहती है। हर गली, हर नगर, हर शहर में लाखों हजारों पाशो आज भी मिलेगी जो आर्थिक विषमताओं एवं अंधविश्वास, एवं लोक लज्जा के डर से उसे शोषण का शिकार होना पड़ता है जिसकी स्थिति आसमान में उड़ते हुए उस पक्षी की भाँति है, जो अचानक पंख टूट जाने पर असहाय होकर छटपटा तो सकता है पर कुछ कर नहीं सकता। कृष्णा सोबती नारी की इन मनोदशाओं से भली–भाँति परिचित हैं उनके उपन्यासों में नारी की आत्मनिर्भरता एवं प्रगतिवादी चिन्तन का स्वर मुखरित हुआ है। पाशो के माध्यम से आज के समाज में पुरूष वर्ग द्वारा नारी जीवन में निहित त्रासद स्थिति का अवलोकन एवं पुनर्मूल्यांकन करना अनिवार्य है।

निष्कर्ष–

कृष्णा सोबती ने अपने कथा–साहित्य में नारी जीवन की त्रासदी, संघर्ष और उत्पीड़न को विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। इनके कथा साहित्य में कहीं नारी विधवा जीवन जीने के लिए अभिशप्त है, तों कहीं करने के लिए विवश है। नारी के लिए दुर्गति के लिए दुराग्रह युक्त समाज में अंध विश्वास, मानसिकता एवं कुसंगतियाँ, व्याप्त, वर्ग चेतना, धार्मिकता, रूढ़ियाँ आदि जिम्मेदार हैं। पाशो आर्थिक पराधीनता के कारण शोषण का शिकार होती है।

आर्थिक अभाव कहीं उसे नर्कतुल्य जीवन जीने पर विवश करता है तो कहीं कर्ज चुकाने हेतु बेच दिया जाता है। संक्षेप हम कह सकते हैं कि कृष्णा सोबती के कथा–साहित्य में नारी के अकेलेपन, अभावग्रस्त जीवन, रूढ़ियों एवं परम्पराओं से घिरी नारी के उत्पीड़न, संघर्ष एवं शोषण की अभिव्यक्ति ही नहीं हैं अपितु उसके समाधान के प्रयास भी किये गये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– 'डार से बिछुड़ी', कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2005
2– 'औरों के बहाने', राजेन्द्र यादव, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014
3– 'औरों के बहाने', राजेन्द्र यादव, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2014